जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक ६ वा ❖ फेब्रुवारी २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.
• पाँच तीर्थंकरों की कल्याणक भूमी श्री अयोध्या तीर्थ	१५
• पुरुषोत्तम श्री राम - जैन साहित्य में	१९
• बलदोटा छात्रावास - बेंगलुरु	२०
• शांती समाधि चाहिए तो संयोग का सही उपयोग किजिए	२१
• कव्हर तपशील	२५
• मोक्ष मार्ग के २१ कदम : लोभ	३१
• नफरत V/S प्यार	३७
• ऐसी हुई जब गुरुकृपा : गौतम सूं प्रीत कर	४१
• अनुभव की अनोखी अनुभूति	४४
• जिन शासन के चमकते हीरे : श्री भद्रसेन	४५
• पाच इंद्रिये - दोन्ही घरांचा (पाहुणा) ?	४७
• बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तर प्रवचन	४९
• सुक्ति से मुक्ति : कला	५१
• मंत्राधिराज प्रवचनसार	६१
• हास्य जागृती	६४
• प्रेम की मीठी नजर, मिटे द्वेष का जहर	६५
• कडवे प्रवचन	६७
• श्री. फत्तेचंदजी रांका - रांका ज्वेलर्स, पुणे	६९
• बाप माणूस - सुरेशभाई गादिया	७०
• सुरेश गादिया मेमोरियल फौंडेशन	७१
• जैन सोशल ग्रुप प्लॅटिनम् - नाशिक	७२
• स्नेहालय - सोलापूर	७२
• पूना हॉस्पिटल रोबोटिक सर्जरी विभाग	७५
• दी पूना मर्चन्ट चेंबर - कार्यकारिणी निवड	७६
• श्री. दिलबाग सिंह बीर - नीळकंठ ज्वेलर्स	७७
• श्री. संजयजी चोरडिया - अटल सन्मान	७८
• श्री. उज्ज्वल निकम - सूर्यभूषण पुरस्कार	७८
• सुर्यदत्त सुर्यभारत - पत्रकारिता पुरस्कार	७९
• मुनोत प्री प्रायमरी स्कूल नामकरण	८०

- व्हीटीपी रिॲलीटी, पुणे ८१
- मुख्यमंत्री वैद्यकीय साहय्यता निधी कसा मिळवावा ? ८८
- डिंपल ओसवाल – संपादिका ८९
- धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा ८९
- जागृत विचार ९०
- जीवदया कार्यक्रम – दिल्ली ९०
- आनंदधाम अहमदनगर – उद्‌घाटन ९१
- आनंदऋषिजी नेत्रालय – अहमदनगर ९१
- गौतम लब्धी फौंडेशन, पुणे ९२
- धनलक्ष्मी ट्रेडिंग कंपनी – अहमदनगर ९२
- आर. एम. डी. फौंडेशन, पुणे ९३
- श्री. महेन्द्रजी सुंदेचा मुथा, पुणे – निवड ९३
- सुरक्षा : आपकी मंजिल सुरक्षित गाडी का पुरस्कार है १०१
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- Google Pay - M. 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा.
- 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

पाँच तीर्थंकरो की कल्याणक भूमी श्री अयोध्या तीर्थ

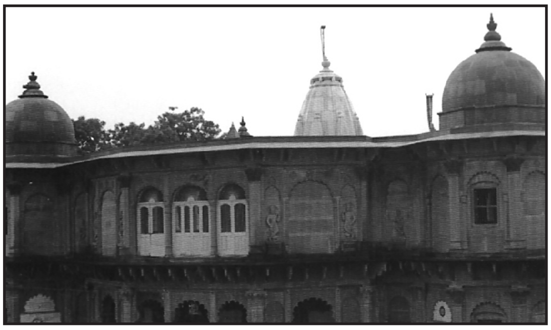

२२ जानेवारी २०२४ रोजी अयोध्या येथे भव्य राम मंदिराची प्रतिष्ठा पंतप्रधान श्री. नरेंद्रजी मोदी यांच्या हस्ते संपन्न झाली. या निमित्ताने अयोध्या शहरात अनेक रस्ते, रेल्वे स्टेशन, विमानतळ इ. अनेक सोई निर्माण केल्या आहेत. या ऐतिहासिक शहरात पाच तीर्थंकरांचे १९ कल्याणक संपन्न झाले आहे. त्यांच्या माहितीचा लेख येथे दिला आहे. **– संपादक**

तीर्थाधिराज ❊ १. श्री अजितनाथ भगवान, ताम्र वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ३० सें. मी. (श्वे. मन्दिर)।

२. श्री आदीश्वर भगवान, कायोत्सर्ग मुद्रा में, श्वेत वर्ण, लगभग ८८५ सें. मी. (दि. मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ❊ सरयू व घाघरा नदी के तट पर बसे अयोध्या शहर के कटरा मोहल्ले में श्वेताम्बर मन्दिर एवं रायगंज मोहल्ले में दि. मन्दिर।

प्राचीनता ❊ इस तीर्थ के प्राचीन नाम ईक्ष्वाकुभूमि, कोशल, विनीता, अयोध्या, अवघ्या, रामपुरी, साकेतपुरी आदि शास्त्रों में बताये गये हैं।

तीसरे आरे के अंतिम काल में यहाँ विमलवाहन आदि ७ कुलकर हुए, जिनमें अन्तिमकुलकर श्री नाभिराज हुए। (दिगम्बर मान्यातानुसार नाभिराज चौदहवें कुलकर हुए इन्हें मनु नाभिराज बताया है)।

नाभिराज की पत्नी का नाम मरुदेवी था। उस समय युगल जोड़ो का ही जन्म होता था। आपस में एक ही साथ रहकर एक ही साथ मरते थे। उस समय ''हाकार'', ''माकार'' एवं ''धिक्कार'' का दण्डविधान चालू था।

मरुदेवी माता ने आषाढ़ कृष्णा चतुर्थी के दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र चन्द्रयोग में चौदह महा-स्वप्न देखे (दि. मान्यतानुसार सोलह स्वप्न)। उसी क्षण वज्रनाभ का जीव बारह भव पूर्ण करके मरुदेवी माता की कुक्षी में प्रविष्ट हुआ। गर्भकाल पूर्ण होने पर चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र चन्द्रयोग में ऋषभचिह्नयुक्त पुत्र का जन्म हुआ। प्रभु का नाम ऋषभ रखा गया। प्रभु के साथ जन्मी कन्या का नाम सुमंगला रखा गया। इन्द्र-इन्द्राणियों ने प्रभु का जन्म कल्याणक मनाया। भगवान की आयु एक वर्ष होने पर सौधर्मेन्द्र दर्शनार्थ आये। तब साथ में इक्षुयष्टि (गन्ना) लेकर आये थे। प्रभु ने गन्ने की तरफ हाथ बढ़ाया। तभी से इक्ष्वाकु वंश की स्थापना हुई मानी जाती है। यह भी कहा जाता है कि प्रभु ने इक्षुरस से पारणा किया उस के बाद उनके वंशज इक्षुवंशी कहलाये।

नाभिराज कुलकर के समय कोई युगल संतान को एक ताड़ वृक्ष के नीचे रखकर क्रीड़ाग्रह में गया। हवा के झोंके से एक ताड़फल बालक के मस्तक पर गिरने से बालक का देहान्त हो गया। बालिका अकेली रह गई ! माता पिता के देहान्त के बाद बालिका अकेली धूमने

लगी। उस समय युगल जोड़े एक ही साथ जन्मते मरते थे। इसलिए उस बालिका को अकेली देख सबको आश्चर्य हुआ एवं नाभिराज के पास ले गये। नाभिराज ने कहा कि यह ऋषभ की पत्नी बनेगी। उसका नाम सुनन्दा रखा गया। इस प्रकार ऋषभदेव भगवान सुमंगला एवं सुनन्दा के साथ बालक्रीड़ा करते हुए यौवन को प्राप्त हुए।

सौधर्मेन्द्र ने प्रभु से लोक व्यवहार प्रारम्भ करने के लिए सुमंगला एवं सुनन्दा से विवाह करने का आग्रह किया। प्रभु ने सहमति देकर सुमंगला एवं सुनन्दा से शादी करके शादी की प्रथा को प्रारम्भ किया।

कालक्रम के प्रभाव से युगलियों में क्रोधादि कषाय बढ़ने लगे। इसलिए ''हाकार'', ''माकार'' और ''धिक्कार'' की दण्ड नीति निरूपयोगी हो गई। आपस में झगड़ा बढ़ने लगा। सब लोग नाभिकुलकर के पास गये। ऋषभ को राजा बनाने का निर्णय लेकर राजा बनाया गया। इस प्रकार अवसर्पिणीकाल में ऋषभदेव ही सबसे प्रथम राजा हुए। प्रभु ने राज-विधान बनाया। राजनैतिक व्यवस्था के लिए पुर, ग्राम, खेट नगर आदि की व्यवस्था करके राष्ट्र को ५२ जनपदों में विभाजित किया। उस समय कल्प-वृक्षों का सर्वथा अभाव हो गया था। प्रभु ने यहीं पर सबसे पहले असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प एवं वाणिज्य इन छह कर्मो का ज्ञान समाज को दिया था। अलग-अलग जातियाँ एवं कुल बनाये। पुरुषों को ७२ कलाओं व स्त्रियों को ६४ कलाओं का ज्ञान करवाया। ब्राह्मी को अठारह लिपियों का एवं सुन्दरी को गणित का ज्ञान समझाया। इस प्रकार उस समय से व्यवहारिक प्रथा प्रारम्भ हुई।

वसन्त ऋतु में प्रभु को परिजनों के संग नंदनोद्यान में क्रीड़ा करते समय वैराग्य उत्पन्न हुआ। प्रभु ने अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत एवं अन्य पुत्रों को राज्य भार संभलाया एवं वर्षीदान प्रारम्भ किया। प्रभु ने एक वर्ष में तीन सौ अठासी करोड़ अस्सी लाख स्वर्ण मुद्राएँ दान देकर चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दीक्षा अंगिकार की। प्रभु का दीक्षा-महोत्सव इन्द्रादि देवों एवं आम जनता ने अति उल्लास पूर्वक मनाया। प्रभु के साथ कच्छ महाकच्छ आदि राजाओं ने भी दीक्षा अंगिकार की। दीक्षा के बाद प्रभु का अनेकों बार यहाँ पदार्पण हुआ एवं समवसरण भी रचा गया। (दिगम्बर मान्यतानुसार श्री ऋषभ देव भगवान का जन्म-कल्याणक चैत्र कृष्णा नवमी को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हुआ माना जाता है एवं दीक्षा चैत्र कृष्णा नवमी को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पुरिमताल (प्रयाग) में हुई मानी जाती है।)

इनके पश्चात् श्री अजितनाथ भगवान, श्री अभिनन्दन भगवान, श्री सुमतिनाथ भगवान, श्री अनन्तनाथ भगवान के भी च्यवन, जन्म, दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भी यहाँ हुए।

भरत चक्रवर्ती द्वारा यहाँ चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ एवं स्तूप चारों दिशाओं में निर्मित करवाने का उल्लेख आता है। उसके पश्चात् भी अनेकों मन्दिर बने होगें। भगवान महावीर ने भी इस पावन भूमि में विहार किया था। चौदहवीं शताब्दी में आचार्य श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी द्वारा रचित ''विविध तीर्थ कल्प'' में उक्त समय यहाँ घाघरा एवं सरयू नदी के तट पर ''स्वर्गद्वार'' रहने एवं उस स्थान पर जिन मन्दिर में रत्नों से निर्मित गोखलों में चक्रेश्वरी देवी एवं गोमुख यक्ष की प्रतिमाएँ रहने का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त यहाँ श्री नाभिराज मन्दिर, पार्श्व वाटिका एवं सीताकुण्ड आदि भी थे ऐसा उल्लेख है।

बारहवीं सदी में यहाँ से तीन प्रतिमाएँ शेरीशा ले जाये जाने का उल्लेख है।

वर्तमान में स्थित दिगम्बर व श्वेताम्बर जिनालयों में प्रतिमाएँ ग्यारहवीं सदी के बाद की नजर आती हैं। मन्दिरों का अनेकों बार जीर्णोद्धार हुआ प्रतीत होता है। हाल ही में इस श्वे. मन्दिर का पुनः जीर्णोद्धार होकर

आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय नित्यानन्दसुरिजी की निश्रा में पुनः प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई ।

विशिष्टता ❊ युगादिदेव श्री आदिश्वर भगवान का च्यवन, जन्म, दीक्षा एवं श्री अजितनाथ भगवान, श्री अभिनन्दन भगवान, श्री सुमतिनाथ भगवान एवं श्री अनन्तनाथ भगवान का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक होने का सौभाग्य इस पावन भूमि को मिला है ।

सामाजिक, राजनैतिक, एवं व्यवहारिक प्रथा प्रारम्भ होने का एवं असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प एवं वाणिज्य का ज्ञान समाज को मिलना प्रारम्भ होने का अवसर भी इसी तीर्थ भूमि को प्राप्त हुआ ।

भरत चक्रवर्ती ने यहीं रहकर संपूर्ण भारत खण्ड पर विजय प्राप्त करके सार्वभौम साम्राज्य की स्थापना की। साम्राज्य का केन्द्र अयोध्या बनाकर भरत-क्षेत्र के प्रथम चक्रवर्ती हुए । तब से हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा ।

भगवान महावीर एवं गौतम बुद्ध का भी यहाँ पदार्पण हुआ था । भगवान महावीर ने यहाँ के राजा चिताल को दीक्षा दी थी ।

श्री बाहुबली, ब्राह्मी, सुन्दरी, राजा दशरथ, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी, श्री महावीर भगवान के नवें गणधर श्री अचलभ्राता, विक्रम की तीसरी सदी में हुए आचार्य श्री पादलिप्तसूरीश्वरजी, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र आदि की भी यह जन्मभूमि है ।

पानी में डूबती हुई अयोध्या को सती सीताजी ने अपने शील के प्रभाव से यहीं रहकर बचाया था ।

अयोध्या का रामराज्य जन-प्रचलित है। रघुकुलपति श्री रामचन्द्रजी के राज्यकाल में जनता सुखी एवं समृद्धिशाली थी जिसे आज भी लोग याद करते हैं ।

इनके अतिरिक्त यहाँ अनेकों धर्मनिष्ठ राजा, मंत्री एवं महात्मा हुए, जिन्होंने अनेकों प्रकार के धार्मिक कार्य करके जैन धर्म का ही नहीं अपितु भारतवर्ष का भी गौरव बढ़ाया है । हिन्दू भी इसे अपना तीर्थ धाम मानते हैं। हिन्दुओं के लिए रामचन्द्रजी का जन्म स्थान एवं सती सीताजी का महल मुख्य दर्शनीय स्थल हैं ।

अन्य मन्दिर ❊ वर्तमान में इन दो मन्दिरों के अतिरिक्त एक प्राचीन दिगम्बर मन्दिर एवं पाँच टूँके हैं।

कला और सौन्दर्य ❊ इतना प्राचीन स्थल होते हुए भी प्राचीन कला के नमूने कम नजर आते हैं । मन्दिरों में नवीन कला के नमूने दिखाई देते हैं। हाल ही में कटरा स्कूल के पास खुदाई के समय खण्डित जिन-प्रतिमा प्राप्त हुई, जो मौर्य कालीन मथुरा-कला की बताई जाती है।

मार्ग दर्शन ❊ अहमदाबाद, लखनऊ एवं दिल्ली से यहाँ के लिए सीधी ट्रेन की सुविधा उपलब्ध है । यहाँ से श्रावस्ती तीर्थ लगभग ११० कि. मी बनारस २०० कि. मी., रत्नपुरी तीर्थ २४ कि. मी. लखनऊ १३५ कि. मी. एवं फैजाबाद ५ कि. मी दूर है। अयोध्या रेल्वे स्टेशन से कटरा मोहल्ला का श्वेताम्बर मन्दिर लगभग २ कि.मी. व रायगंज का दिगम्बर मन्दिर लगभग १.५ कि. मी. दूर है जहाँ पर टैक्शी एवं आटो का साधन है। मन्दिरों के निकट तक कार एवं बस जा सकती है ।

सुविधाएँ ❊ दोनों मन्दिरों के निकट में ही सर्वसुविधायुक्त धर्मशालाएँ हैं, जहाँ पर भोजनशाला की भी सुन्दर व्यवस्था हैं।

पेढ़ी ❊ १. श्री अयोध्या तथा श्री रत्नपुरी जैन श्वेताम्बर तीर्थ ट्रस्ट, कटरा मोहल्ला,
पोस्ट : अयोध्या - २२४ १२३.
जिला : फैजाबाद, प्रान्त : उत्तर प्रदेश,
फोन : ०५२७८-३२११३.

२. श्री दिगम्बर जैन अयोध्या तीर्थ क्षेत्र कमेटी, रायगंज मोहल्ला,
पोस्ट : अयोध्या - २२४ १२३.
जिला : फैजाबाद, प्रान्त : उत्तर प्रदेश,
फोन : ०५२७८-३२३०८.

(साभार : तीर्थ दर्शन - प्रथम खंड
श्री जैन प्रार्थना मन्दिर ट्रस्ट, चैन्नई) ●

शांति-समाधि चाहिए तो संयोग का सही उपयोग कीजिए

प्रवचनकार : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

मैं अविनाशी सिद्ध भगवन्त, अनंत ज्ञानी अरिहंत भगवान और साधकों के प्रमुख संतों के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ!

बन्धुओं !

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में योग और उपयोग का महत्त्व बताया है। योग की प्राप्ति अनन्त काल से है, संयोग अनन्त पुण्यवानी से मिलता है, उपयोग जीवन के विकास में सहयोगी होता है। संसारी जीव अनन्त काल से योग वाला था। जब वह व्यवहार राशि में था तब भी और अव्यवहार राशि में था तब भी। एकेन्द्रिय में था तब भी काया का योग था। योग में जब पुण्यशीलता बढ़ी तो वचन योग मिला, जीव एकेन्द्रिय से बेइन्द्रिय बना। पुण्यशीलता बढ़ी तो बेइन्द्रिय से तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय बना और पुण्याई बढ़ी तो पंचेन्द्रिय बना, पंचेन्द्रिय के साथ मन का योग बना। संयोग से ऐसी पुण्यशीलता प्रकट हुई, अगर उसका सही उपयोग किया जाता है तो अन्तर्मुहूर्त में अनन्त-अनन्त जन्मों के कर्मों का क्षय कर जीव, मोक्ष में जा सकता है। संयोग से शक्ति बढ़ती है। एकेन्द्रिय जीव कितने ही कर्म करे, वह नरक में नहीं जाता। ज्यों-ज्यों योग बढ़ेंगे, संयोग प्राप्त होंगे और अगर उनका दुरुपयोग किया तो दुर्गति निश्चित है और सदुपयोग किया तो सद्गति होगी ही।

आपको शिक्षा के, ज्ञान के, प्राप्त योग के सही उपयोग करने की बात कही जा रही है। आप व्यावहारिक दृष्टिकोण को लेकर देखिये- जन्मते बच्चे को मीठा दूध पीने को मिला। बच्चा बड़ा हुआ, दूध में शक्कर मिलाकर पीने को दूध मिला। दूध मीठा, शक्कर मीठी, मीठे में मीठा। दूध के दृष्टान्त से आप परिचित हैं कि दूध अपने-आपमें मीठा है उसमें मीठी शक्कर घुल गई तो मिठास और बढ़ जाएगी। इसलिए आपको बोलने का काम पड़े तो मीठा बोलिए।

आप जानते हैं-साँप दूध पीता है, तब भी जहर बनता है। कहावत है- साँप को चाहे जितना दूध पिलाओ, वह तो जहर उगलेगा। आदमी मीठा खाता है, फिर खारा क्यों बोलता है? जो मीठा दूध पीकर या मीठा खाकर, खारा बोले तो कहना होगा- वह आदमी भी है क्या? मैं अपने शब्दों के बजाय तीर्थंकर भगवन्तों के शब्दों में कहूँ- खारा बोलने वाला अनार्य है, आर्य नहीं। हमारा देश आर्य कहलाता है। हमारी भाषा आर्य कही जाती है। फिर हम इस जमाने को आर्य कहने में संकोच क्यों करते हैं? देश, जाति, प्रान्त, भाषा अनार्य नहीं होते, अनार्य होते हैं संस्कार । अनार्य आचरण होता है, अनार्य व्यवहार होता है। देश तो क्या, कर्म भी अनार्य नहीं होते।

ज्यों-ज्यों संयोग से शक्ति बढ़ती है त्यों-त्यों लब्धियाँ प्रकट होती हैं। उन लब्धियों-सिद्धियों से अकल्पित काम, क्षण भर में हो जाते हैं। आचार्य श्री मानतुंग ने श्रद्धा-भक्ति के कारण अड़तालीस-अड़तालीस तालों के बन्धन से मुक्ति प्राप्त की। न कोई अस्त्र था, न शस्त्र । न चाबी, न हथौड़ा फिर बन्धन कैसे कटे? वहाँ वचन का बल था, श्रद्धा थी और भक्ति थी इसलिए एक-एक श्लोक की रचना के साथ एक-एक बन्धन टूटता गया। यह तो उदाहरण है आपके ध्यान में दूसरा उदाहरण भी है कि एक वचन से महाभारत खड़ा हो गया और लाखों लोग मारे गए। महाभारत वचन के कारण खड़ा हुआ। कहा भी है-

बोली बोल अमोल है, जो कोई जाने बोल ।
पहले भीतर तौलकर, फिर तूँ मुखड़ा खोल ।।

आप मेरे आगे-आगे बोल रहे हैं। इसका मतलब

है कि यह दोहा आपके ध्यान में है। आप सबको दोहा आता है, दोहे का अर्थ आता है, दोहे का हार्द मालूम है फिर ये लड़ाईयाँ झगड़े क्यों होते हैं? आज बात-बात पर लड़ाई होती रहती है, छोटी-सी बोल-चाल झगड़े का रूप ले लेती है। भगवान ने 'मुख अरि' यानी मुख को शत्रु बताया है। जिनके वचन शत्रु बनाने वाले हैं उनका बोलना, बोलना नहीं, जहर उगलना है। आदमी बोलकर अपने को पराया कर देता है। आप बच्चों को पढ़ाते हैं-लिखाते है-सिखाते हैं पर यदि उन्हें बोलना नहीं आया तो उस पढ़ाई का क्या अर्थ ? पढ़ने का सार क्या? दो और दो पाँच? या दो और दो चार । दो और दो चार होते हैं फिर पाँच कहाँ से आया? आप मीठा खाने वाले हैं। मीठे घरों में जन्में है, सामायिक-स्वाध्याय करने वाले हैं, आपके दिमाग में दो और दो पाँच आए तो क्यों आए?

भारत के प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी को जैनियों के सम्मेलन में आमन्त्रित किया गया। वाजपेयीजी ने सम्मेलन में हल्ला-गुल्ला और आपा-धापी देखकर एक व्यंग्य कसा। कहा- मैं संसद में बैठा हूँ या जैनियों की सभा में? जैन इस तरह लड़ेंगे, यह मुझे आज ज्ञात हुआ है। लड़े कौन? पढ़े-लिखे आदमी? मैं तुलसीदासजी की उक्ति में कहूँ :

काम, क्रोध, मद लोभ की, जब लग घट में खान।

तुलसी पंडित मूरखा, दोनों एक समान ।।

पंडित और मूर्ख में क्या अन्तर? जानने वाला कौन? अनजान कौन? आप पढ़े-लिखे को पंडित कहते हैं, अनपढ़ को नादान या अज्ञानी कहते हैं आप जानते हैं वर्षा का पानी जब बहता है तो बच्चे गली-मोहल्ले में सड़कों पर उछल-कूद करते है। वे तो बच्चे हैं, नादान हैं, नासमझ हैं, क्या आप भी बच्चों की तरह सड़क पर बहते पानी में उछल-कूद करते हैं? हम बच्चों जैसा व्यवहार नहीं कर सकते।

आप बच्चे नहीं, बच्चों के पिता हैं। बच्चों के पिता ही नहीं, दादा हैं। फिर, आपके मुँह से बच्चों के लिए नालायक, कुत्ता, बेईमान जैसे शब्द कैसे निकलते हैं? आप बड़े हैं तो आपको बड़प्पन रखना चाहिए। आप सुज्ञ हैं, सामायिक-स्वाध्याय करते हैं। अतः आपकी साधना का असर आपके जीवन-व्यवहार में झलकना चाहिए। बच्चों में और बड़ों के व्यवहार में अन्तर होता है, वैसे ही मूर्ख और पंडित में भी अन्तर होना चाहिए या नहीं?

आप ज्ञानवान है, पढ़े-लिखे हैं। शिक्षित हैं, साधना करते हैं तो आपके जीवन-व्यवहार में शांति-समाधि और संयोग का उपयोग करना आना चाहिए। आप इस भ्रम में नहीं रहें कि मैं पढ़ा-लिखा, डिग्री वाला होने से बड़ा हो गया। आप बाप हो या दादा, आपको अपना व्यवहार कैसा है, उस पर विचार करना चाहिए। अपना जीवन कैसा है, निरीक्षण करना चाहिए। वाणी कैसी है देखना चाहिए। हर व्यक्ति को अपना चिन्तन करना चाहिए।

मैं कभी-कभी जज साहब इन्दरनाथजी मोदी का दृष्टान्त दिया करता हूँ। वे अपने पोते से भी कहते तो बोलते- ''पोतासा अठी पधारो ।'' वे न्यायाधिपति थे, बड़े आदमी थे। उनकी बोली कैसी थी? आज कई लोग अपने-आपको बड़ा मानते हैं, लेकिन उनकी भाषा, उनके वचन, उनका व्यवहार वैसा नहीं है। कुछ तो अपने बच्चों को पुकारते हैं तो नाम को बदरूप करके पुकारने में अपनी शान समझते हैं। मान लीजिए बच्चे का नाम रमेश है तो कहते हैं- ''रमेशिया ।'' कहाँ गया पूछना हो तो कहते हैं- ''रमेशिया, तू कठे बलियो?'' जैसी बोली बच्चा सुनता है, बोली का असर बच्चे के जीवन पर भी होता है। बच्चा जवाब में कह देगा- ''मैं बेरा (कुएँ) में पड़ियो हूँ।'' आप पारस को पारसिया बोलें और सामने वाले से यह अपेक्षा रखें कि वह सम्मान-सूचक शब्द में पुकारे तो ऐसा संभव नहीं है।

वाणी, वाणी होती है। चाहे वह छोटे की है या बड़े की, क्योंकि वाणी न छोटी होती है न बड़ी। कुएँ में

जैसी आप आवाज लगाएँगे, प्रतिध्वनि वैसी ही सुनाई देगी। इसी वाणी से दुःख मिलता है तो सुख देने वाली भी यही वाणी है। आपने दृष्टान्त सुना होगा। अकबर ने बीरबल से पूछा– मित्र कौन और दुश्मन कौन? बीरबल ने उत्तर में कहा– जहाँपनाह ! हमारी जुबान ही मित्र है, जुबान ही शत्रु है।

बादशाह ने कहा– ''जुबान एक है तो वह शत्रु और मित्र दोनों कैसे हो सकती है?''

एक दिन बीरबल ने बेगम को भोजन के लिए आमन्त्रित किया। खूब खातिर-तवज्जोह दी, अच्छे पकवान खिलाए, अच्छा स्वागत-सत्कार किया। जब रानी साहिबा वापस लौटने लगी तो बीरबल ने पूछ ही लिया कि ''क्या आपके बाप के राज में कभी ऐसा भोजन किया?'' रानी साहिबा, खाया-पिया, स्वागत-सत्कार सब भूल गई और उसे रह-रह कर बीरबल की बात मन-ही-मन कचोटने लगी। मेरी बात आप सबको समझ में आ रही है। आप चाहे श्रावक हों, श्राविका हों, बालक हों, बालिका हों, युवक हों, युवतियाँ हों या हम साधु-साध्वी भी क्यों न हों, हम सबको यह समझ में आ रहा है कि वाणी हमारी मित्र है और वाणी शत्रु भी है। इस वाणी से पराया अपना बन जाता है। मित्र, शत्रु बनते देर नहीं करता, शत्रु मित्र बन सकता है। वचन से दोस्त बनते हैं तो दुश्मन भी बनते हैं। जिसके साथ, जीवन के ५०-५० वर्ष तक साथ रहे, उम्र ७५ से ऊपर हो गई, फिर भी तलाक की अर्जी कोर्ट में चल रही है। क्यों? कारण क्या? कारण है 'यही जुबान।'

एक बाप-बेटा है। बाप की उम्र अस्सी वर्ष के लगभग है तब भी बेटा बाप को छोड़ रहा है। क्यों? कारण क्या? जिस बेटे ने आज तक सेवा नहीं की वह बाप का साथ क्यों छोड़ना चाहता है? क्योंकि बेटा बाप की जुबान सहन नहीं कर सकता। मैंने कहा, फिर से दोहरा रहा हूँ– तन से ज्यादा शक्ति जुबान में है, जुबान से ज्यादा शक्ति मन में है। मन के साथ श्रद्धा जुड़ जाय तो अनाथी मुनि की तरह क्षण-भर में रोग दूर हो सकता है।

मैं आपको कहानियाँ नहीं सुना रहा हूँ। आपको अनुभव होगा– मंगल पाठ सुनने से रोग ठीक हो सकता है। चुटकी भर राख से रोग मिट सकता है। यह ताकत है, श्रद्धा में। मैं दृष्टान्त नहीं, हकीकत बयाँ कर रहा हूँ।

आप संस्कारवान हैं, सामायिक करने वाले हैं। स्वाध्याय करते हैं। फिर भी मेरा कहना कि जब तक जीवन-व्यवहार में परिवर्तन नहीं आएगा तब तक सामायिक-स्वाध्याय और साधना का कोई अर्थ नहीं है। आप इस बात का मन में अहं नहीं करें कि मैं साठ-सत्तर साल का हो गया हूँ, मुझमें इतनी समझ तो है। मुझको सामायिक करते वर्षों हो गए। मैं अच्छा क्या, बुरा क्या, जानता हूँ। आपका व्यवहार ठीक है तो उसका प्रभाव होगा अन्यथा कहने का कोई प्रभाव नहीं होगा। आपका जीवन-व्यवहार सुन्दर होगा तो घर के ही नहीं, आसपास के सभी लोग आपके मित्र होंगे, आपके घर में सुख-चैन होगा और आपके मन में शांति होगी। यह कब होगा? जब आप संयोग का सही उपयोग करेंगे। इस तन में, इस वचन में इस मन में इतनी ताकत है कि आप अन्तर्मुहूर्त में अनन्त-अनन्त कर्मों का क्षय कर सकते हैं। दूसरी तरफ आप बुरा चिन्तन करके सातवीं नरक के मेहमान भी बन सकते हैं।

आपको हमको यह चिन्तन करना चाहिए कि योग का सही उपयोग हो रहा है या नहीं? हम प्राप्त योग का जितना-जितना सदुपयोग करेंगे, उतने-उतने हम ज्ञानी कहलायेंगे। योग के दुरुपयोग का नतीजा है कि हम किसी और का नहीं, अपना और अपने बच्चों का बिगाड़ कर रहे हैं। ऐसा करने वाले अपने जीवन को अशान्त तो करते ही है, घर-परिवार की शांति भंग करने में निमित्त भी बनते हैं।

भगवान की यह वाणी हर व्यक्ति के लिए है, वह चाहे छोटा है या बड़ा। आप समय का नियोजन करके चलें तो सामायिक करना भारी नहीं लगेगा। सामायिक-स्वाध्याय करते-करते जीवन-व्यवहार में परिवर्तन आएगा। जरूरत है आप प्राप्त योग का सदुपयोग करें, इस मंगल भावना के साथ... •

कव्हर तपशील - फेब्रुवारी २०२४

❖ **श्री अयोध्या तीर्थ**

पाच तीर्थंकरांची कल्याणक भूमी श्री अयोध्या तीर्थ. (लेख पान नं. १५)

❖ **आनंदधाम – अहमदनगर**

आनंदधाम, अहमदनगर नूतनीकृत स्वाध्याय भवनचे उद्घाटन मालेगांव येथील श्री. राजेंद्रजी सुराणा व सुराणा परिवाराच्या हस्ते संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ९१)

❖ **जेएटीएफ बलदोटा वसतिगृह– बेंगलुरु**

बेंगलुरु येथे जेएटीएफ वसतिगृहाचे नवीन संलग्न इमारतचे उद्घाटन श्री. नरेंद्रजी बलदोटा व सौ. चित्रादेवी बलदोटा यांच्या हस्ते संपन्न झाले. (बातमी पान नं. २०)

❖ **मुनोत स्कूल नामकरण – वाघोली**

सिद्धाचलम वाघोली येथील प्री प्रायमरी स्कूलचे संथाराधारी स्व. सौ. विमल कांतीलालजी मुनोत प्री स्कूलचे नामकरण संपन्न झाले.
(बातमी पान नं. ८०)

❖ **श्री. फत्तेचंदजी रांका, पुणे – पुरस्कार**

पुणे येथील रांका ज्वेलर्स प्रा. चे संचालक व धार्मिक, सामाजिक कार्यात अग्रेसर श्री. फत्तेचंदजी रांका यांना आदर्श जीवन गौरव पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले. (बातमी पान नं. ६९)

❖ **पूना हॉस्पिटल रोबोटिक सर्जरी – विभाग**

पुणे - पूना हॉस्पिटल अँड रिसर्च सेंटर मधील रोबोटिक सर्जरी विभागाचे उद्घाटन प्रख्यात उद्योजक श्री. अतुलजी चोरडिया यांच्या हस्ते संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ७६)

❖ **श्री. दिलबाग सिंह बीर – निळकंठ ज्वेलर्स, पुणे**

पुणे येथील नीळकंठ ज्वेलर्सचे संचालक श्री. दिलबाग सिंह बीर यांना रिटेल ज्वेलर इंडिया फोरम २४ मध्ये ''लाईफ टाईम अचीव्हमेंट ॲवार्ड'' देऊन सन्मानित करण्यात आले. त्यावेळी त्यांचे सुपुत्र साहेबदयाल सिंह बीर व सुरेंद्रपाल सिंह बीर हे देखील उपस्थित होते. (बातमी पान नं. ७२)

❖ **प्रा. डॉ. संजयजी बी. चोरडिया – अटल सन्मान**

नवी दिल्ली येथील अटल फाउंडेशनच्या वतीने देशाचे माजी पंतप्रधान भारतरत्न अटल बिहारी यांच्या जयंतीनिमित्त आयोजित कार्यक्रमात सूर्यदत्त एज्युकेशन फाउंडेशनचे संस्थापक अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजयजी बी. चोरडिया यांना 'इंटरनॅशनल अटल अवॉर्ड' प्रदान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ७८)

❖ **व्हीटीपी रिअ‍ॅलीटी, पुणे**

पुणे येथील व्हीटीपी रिअ‍ॅलिटीने रियल इस्टेट मध्ये एका वर्षात ५ दशलक्ष चौरस फुट वितरणांचा टप्पा गाठून अद्वितीय कामगिरी केली आहे. (बातमी पान नं. ८१)

❖ **धनलक्ष्मी ट्रेडिंग कंपनी, अहमदनगर**

टेक्निकल क्वालिटी व्हेरिफिकेशन (T.Q.V) सपोर्टर पार्टनर बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (B.S.E.) यांच्या वतीने देण्यात येणारा ''इंडिया ५००० बिझनेस ॲवार्ड'' मेसर्स धनलक्ष्मी ट्रेडिंग कंपनी, अहमदनगर यांना मिळाले.
(बातमी पान नं. ९२) •